

**सार्वकालिक वि.** (तत्.) 1. जो हर समय होता हो 2. सब कालों में होने वाला, सब समयों का 3. जिसका संबंध सब कालों से हो, सर्वकाल संबंधी।

**सार्वजनिक वि.** (तत्.) 1. सब लोगों से संबंध रखने वाला, सर्वसाधारण संबंधी 2. समान रूप से सब लोगों के काम में आने वाला common

**सार्वजनीन वि.** (तत्.) सार्वकालिक, सार्वजनिक।

**सार्वजन्य वि.** (तत्.) सार्वजनिक।

**सार्वरय पुं.** (तत्.) सर्वज्ञता।

**सार्वत्रिक वि.** (तत्.) जो सब स्थानों तथा स्थितियों में प्रायः समान रूप से मिलता, रहता या होता हो। universal

**सार्वदेशिक वि.** (तत्.) 1. जो सब देशों में होता हो 2. जिसका संबंध सब देशों से हो universal 3. संपूर्ण देश में होने वाला।

**सार्वनामिक वि.** (तत्.) 1. सर्वनाम संबंधी, सर्वनाम का 2. सर्वनाम से निकला या बना हुआ।

**सार्वभौतिक वि.** (तत्.) 1. जिसका संबंध सब भूतों या तत्वों से हो 2. सब प्राणियों से संबंध रखने या उनमें होने वाला।

**सार्वभौम वि.** (तत्.) 1. संपूर्ण भूमि से संबंध रखने वाला 2. सब देशों से संबंध रखने या मन में होने वाला पुं. 1. चक्रवर्ती राजा 2. हाथी।

**सार्वभौमता स्त्री.** (तत्.) राजाधिराजत्व, चक्रवर्तित्व।

**सार्वभौमिक पुं.** (तत्.) वह जिसका दृष्टिकोण इतना विस्तृत हो कि संसार के सब देशों तथा उनके निवासियों को एक समान देखता, समझता तथा मानता हो ऐसा व्यक्ति स्थानिक राष्ट्रीय, जातीय तथा अन्य संकुचित विचारों से रहित होता है cosmopolitan

**सार्वराष्ट्रीय वि.** (तत्.) 1. सब या अनेक राष्ट्रों से संबंध रखने वाला, अंतरराष्ट्रीय 2. नियम या सिद्धांत जिसे सब राष्ट्र में मान्यता मिली हो।

**सार्वलौकिक वि.** (तत्.) 1. जो संपूर्ण लोक या विश्व में प्रचलित या व्याप्त हो 2. जिसका

संबंध सब लोगों से हो 3. जिसे सब लोग जानते हों 4. विश्वक।

**सार्ववर्णिक वि.** (तत्.) 1. जो सभी वर्णों या जाति से संबंधित हो, सभी वर्गों/जातियों का 2. सभी वर्णों वाला।

**सार्वविभक्तिक वि.** (तत्.) 1. जो सभी विभक्तियों से संबंधित हो 2. जो सभी विभक्तियों में प्रयोज्य हो।

**सार्विक वि.** (तत्.) 1. जो प्रायः सर्वत्र या समान रूप से दिखाई देता हो 2. प्रायः किसी जाति, समाज, राष्ट्र आदि के समस्त सदस्यों में समान रूप से मिलने या होने वाला, आम general

**सार्विक वध पुं.** (तत्.) किसी स्थान पर रहने वाले या एकत्रित लोगों की सामूहिक हत्या करना।

**सार्विक हड़ताल स्त्री.** (तत्.) वह हड़ताल जिसमें अपनी मांग या समस्या को लेकर किसी संघ, संगठन या विभाग के सभी कर्मचारी सम्मिलित होते हैं।

**सार्षय पुं.** (तत्.) 1. सरसो 2. सर्षण का तेल 3. सरसों का बना हुआ साग आदि।

**सार्षि स्त्री.** (तत्.) 1. सृष्टिजन्या 2. पाँच प्रकार की मूर्तियों में से एक 3. सृष्टि का भाव या अवस्था वि. जो अधिकार, पद आदि की दृष्टि से किसी के सदृश हो।

**सार्षिता स्त्री.** (तत्.) पद, अधिकार, स्थिति आदि की दृष्टि से होने वाली समानता की स्थिति।

**सालंक पुं.** (तत्.) तीन प्रकार के रागों में से एक वह राग जो शुद्ध और स्वतंत्र होने पर भी किसी दूसरे राग की छाया से प्रभावित हो।

**सालंकार वि.** (तत्.) 1. अलंकारों से युक्त, आभूषण युक्त 2. अलंकृत 3. साहित्यिक अलंकार-अनुप्रास, उपमा, रूपकादि से युक्त।

**सालंग पुं.** (तत्.) सालंक नाम का एक राग।

**सालंब वि.** (तत्.) अवलंबयुक्त, साश्रय, जो किसी सहारे हो।